an>

title: Need to take effective measures to check pollution caused by tar balls in the coastal region of Gujarat.

श्रीमती जयश्रीबेन पटेल **(मेहसाणा) :** भारतीय समुद्री सीमा में "टारबोल प्रदूषण" के कारण गुजरात के तीर्थल, मरोली, उमरगांव तथा प्राकृतिक सौन्दर्य और पर्यावरण के लिए जाना जाने वाला नारगोल का प्रवासन सेन्टर भयग्रस्त हो गया है। ऑयल युक्त कचरे के कारण समुद्र में जमी हुई काई भी प्रदूषित हो रही है जिसके कारण वहां के लोगों में चमड़ी का रोग बढ़ रहा है। समुद्र में ऑयल फैलने के कारण उसमें रहने वाले जीव-जंतुओं जैसे - डॉलफिन, कछुआ, जैलीफिश, दरियाई जीवों इत्यादि को हानि पहुंच रही है तथा यह जीव-जंतु प्रदूषण के कारण मृत्यु का ग्रास बन रहे हैं। इस फैलते प्रदूषण के कारण समुद्री जीव सृष्टि के साथ-साथ लोगों के स्वास्थ्य पर भी असर पड़ रहा है। इसके कारण ग्राउण्ड वाटर भी प्रदूषित हो रहा है तथा यहां के कोस्ट गार्ड के पास अपनी खुद की कोई लेबोट्री भी नहीं है। एन.आई.ओ. ने पर्यावरण मंत्रालय को लेब बनाने के लिए भी कहा है लेकिन कोस्ट गार्ड लेब की जिम्मेदारी लेने के लिए आगे नहीं आ रहा है।

अतः मेरा केन्द्र सरकार से आग्रह है कि इस प्रदूषण के मूल तक जाने तथा उससे निजात पाने के लिए कड़ कदम उठाए जाएं और गुजरात में "वाटर फिंगर प्रिंटिंग लेबोरेटरी" की स्थापना की जाए।